Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

D.E.C.E.-1

बाल देखभाल सेवाओं का संगठन

(Organising Child Care Services)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Sonia Mehandiratta,* M.A. (Education), B.Ed.

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 300/-

Content

बाल देखभाल सेवाओं का संगठन
(Organising Child Care Services)

Question Paper—June-2023 (Solved) 1-2
Question Paper—December-2022 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1-3
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1-3
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1-3
Question Paper—June, 2019 (Solved) 1-6
Question Paper—June, 2018 (Solved) 1-2
Question Paper—June, 2017 (Solved) 1-2

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1.	बाल्यकाल के अनुभव (The Experience of Childhood)	1
2.	बाल विकास की मूलभूत संकल्पनाएँ (Basic Concepts in Child Development)	5
3.	विकास के सिद्धान्त (The Principles of Development)	9
4.	बच्चों की आवश्यकताएँ और अधिकार (The Needs and Rights of Children)	12
5.	विकास में खेल का महत्त्व (The Importance of Play in Development)	16
6.	जन्मपूर्व विकास और उससे संबंधित देखभाल (Pre-natal Development and Care)	20
7.	शारीरिक, क्रियात्मक और संवेदात्मक विकास (Physical, Motor and Sensory Development)	24
8.	संज्ञानात्मक विकास : विचारशक्ति का आविर्भाव (Cognitive Development: The Emergence of Thought)	28

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

9. भाषा का विकास : बोलना सीखना 31
(Language Development: Learning to Speak)

10. सामाजिक-भावात्मक विकास : प्रारम्भिक संबंध 35
(Socio-Emotional Development: The Early Relationships)

11. विकास को बढ़ावा देने के लिए खेल क्रियाएँ 40
(Play Activities for Fostering Development)

12. शारीरिक और क्रियात्मक विकास : बढ़ती हुई गतिशीलता और नियंत्रण 44
(Physical and Motor Development: Increasing Mobility)

13. संज्ञानात्मक विकास : मानसिक संकल्पन और प्रतीकात्मक विचारशक्ति की ओर 47
(Cognitive Development: Towards Mental Representation and Symbolic Thinking)

14. भाषा संबंधी विकास : शब्दों से वाक्यों का प्रयोग 49
(Language Development: From Words to Sentences)

15. सामाजिक-संवेगात्मक विकास : बढ़ते हुए संबंध और स्व का उभरना 52
(Socio-Emotional Development: Expanding Relationships and the Emerging Self)

16. विकास को बढ़ावा देने के लिए खेल क्रियाएँ 56
(Play Activities for Fostering Development)

17. शारीरिक सुदृढ़ता और समन्वय में सुधार 59
(Physical Growth and Motor Development)

18. संज्ञानात्मक योग्यताओं और संकल्पनाओं का विकास 62
(Developing Cognitive Abilities and Understanding Concepts)

19. भाषायी विकास : शालापूर्व वर्षों में 67
(Enhancing Language Skills)

20. समाजीकरण और पालन-पोषण के तरीके 72
(Social Relationship and Child Rearing)

21. शारीरिक गतिविधियों तथा गतिशीलता के लिए खेल क्रियाएँ 79
(Activities for Movement and Mobility)

22. परिवेश का अन्वेषण 85
(Exploring the Environment)

23. संज्ञानात्मक योग्यताओं और संकल्पनाओं के विकास के लिए खेल क्रियाएँ 90
(Learning Some Concepts)

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
24.	भाषायी विकास को बढ़ावा देने के लिए खेल क्रियाएँ (Furthering Language)	98
25.	फैंटेसी, कहानी सुनाना और नाटकीय खेल (Fantasy, Story-telling and Dramatization)	103
26.	संगीत तथा शारीरिक क्रियाकलाप (Music and Physical Activities)	108
27.	बच्चों के लिए कला संबंधी खेल क्रियाएँ (Art for Children)	112
28.	बच्चों की सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करना (Nurturing Creativity)	117
29.	भारत में बच्चों के लिए देखभाल सेवाएँ (Child Care Services in India)	120
30.	पाठ्यचर्या की योजना बनाना (Planning the Curriculum)	126
31.	केन्द्र स्थापित करना तथा चलाना (Setting up and Running a Centre)	135
32.	परिवार और समुदाय को सम्मिलित करना (Involving the Family and Community)	139
33.	मूल्यांकन (Evaluation)	143
	प्रयोगात्मक कार्यों की नियमावली : परिचय (Rules and Regulations of Practical Activities: An Introduction)	151

Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers

Published by:

NEERAJ
PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

बाल देखभाल सेवाओं का संगठन

(Organizing Child Care Services)

D.E.C.E.-1

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : प्रश्न सं. **1 अनिवार्य** है। शेष में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

प्रश्न 1. (क) चार वर्ष की आयु वर्ग के 20 बच्चों के समूह के लिए क्रियाओं की अनुसूची की योजना बनाइए और बताइए कि प्रातः 9.00 बजे से दोपहर 12.30 तक बच्चे क्या क्रियाएँ करेंगे।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-30, पृष्ठ-129, 'शाला पूर्व बच्चों के केन्द्र के लिए अनुसूची'

(ख) दैनिक क्रियाओं की अनुसूची बनाते समय आपने जिन पहुलओं को ध्यान में रखा, उनका वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-30, पृष्ठ-128, 'दैनिक अनुसूची तैयार करना'

(ग) निम्नलिखित प्रत्येक क्रिया प्रमुख रूप से विकास के किस क्षेत्र को बढ़ावा देती है? स्पष्टीकरण के लिए उदाहरण देखिए।

क्रिया	विकास का क्षेत्र
उदाहरण: बाधाओं के ऊपर से लांघना	स्थूल क्रियात्मक विकास

***(i)* कार्डों की बनावटों के आधार पर उन्हें अलग करना।**

उत्तर–संज्ञानात्मक विकास।

***(ii)* भूमिका-अभिनय।**

उत्तर–सामाजिक तथा भाषा संबंधी विकास।

***(iii)* कहानी सुनना।**

उत्तर–संज्ञानात्मक विकास।

***(iv)* चिड़ियाघर का भ्रमण**

उत्तर–शारीरिक तथा सामाजिक विकास।

***(v)* जमीन पर खींची गई सीधी रेखा पर चलना।**

उत्तर–सूक्ष्म-क्रियात्मक विकास।

प्रश्न 2. (क) खेल की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-16, 'विकास में खेल की भूमिका'

(ख) जीवन के प्रथम दो वर्षों में बच्चों की विचारशक्ति योग्यताओं के किन्हीं दो पहलुओं/विशेषताओं का उदाहरण देते हुए वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-28, 'पहले वर्ष में विचारशक्ति', अध्याय-13, पृष्ठ-47, 'दूसरे वर्ष में विचारशक्ति : संवेदी क्रियात्मक अवधि'

प्रश्न 3. (क) 'अपरिचित के प्रति व्यग्रता' और 'बिछुड़ने का भय' के बीच अंतर बताते हुए वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-37, 'अपरिचित के प्रति व्यग्रता', 'बिछुड़ने का भय'

(ख) माता-पिता के व्यवहार की किन्हीं दो शैलियों और बच्चे के व्यक्तित्व पर उनके प्रभाव का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-20, पृष्ठ-74, 'माता-पिता का व्यवहार'

प्रश्न 4. निम्नलिखित प्रत्येक के विकास के लिए एक-एक खेल आधारित क्रिया का वर्णन कीजिए–

(क) पांच वर्ष की आयु के बच्चों में क्रमबद्धता की योग्यता

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-23, पृष्ठ-92, 'क्रमबद्ध कर पाने की योग्यता को बढ़ावा देने संबंधी खेल क्रियाएं'

(ख) तीन वर्ष की आयु के बच्चों में दृष्टिमूलक विभेदीकरण कौशल

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-23, पृष्ठ-91, 'दृष्टेनिद्रय और श्रवणेन्द्रिय संबंधी खेल क्रियाएं'

(ग) दो वर्षीय बच्चे में स्थूल क्रियात्मक कौशल

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-144, 'स्थूल क्रियात्मक कौशल'

(घ) पांच वर्षीय बच्चे की कल्पनाशीलता

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-25, पृष्ठ-103, 'फैंटेसी'

प्रश्न 5. (क) ''किसी संकल्पना को समझने में बच्चों की मदद करने का सर्वोत्तम तरीका है, उन्हें संकल्पना के बारे में भाषाण/व्याख्या देना।'' क्या आप इस कथन से सहमत हैं? उदाहरण देते हुए अपने उत्तर के पक्ष में कारण दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-19, पृष्ठ-68, 'भाषा का प्रयोग', पृष्ठ-69 'भाषायी विकास को बढ़ावा देना'

(ख) 'स्थूल क्रियात्मक विकास' से आप क्या समझते हैं? प्रथम दो वर्षों में बच्चे की स्थूल क्रियात्मक योग्यताओं के उभरने का क्रम बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-126, 'स्थूल क्रियात्मक कौशल'

प्रश्न 6. (क) शालापूर्व बच्चों में सृजनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए एक शिक्षिका को जिन सिद्धांतों को ध्यान में रखना चाहिए, उनमें से किन्हीं तीन का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-28, पृष्ठ-117, 'बच्चे और सृजनात्मकता'

(ख) ''यदि कोई बच्चा गिनती सही अनुक्रम में सुनाता है, तब यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि बच्चा गिन पाने की योग्यता रखता है।''

क्या आप इस कथन से सहमत हैं? अपने उत्तर के पक्ष में कारण दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-18, पृष्ठ-64, 'संख्या संबंधी कल्पना'

प्रश्न 7. निम्नलिखित में से किन्हीं दो का वर्णन कीजिए–

(क) शालापूर्व वर्षों में अहंकेन्द्रिता

उत्तर–पीयाजे ने बताया कि शालापूर्व बच्चे चीजों को पूर्णत: अपने परिप्रेक्ष्य से ही देखते हैं और अपने ही विचारों के संबंध में सोचते हैं। वे महसूस करते हैं कि दूसरे लोग भी उन्हीं की भाँति देखते, समझते व घटनाओं व क्रियाओं को व्याख्यायित करते हैं। पीयाजे ने बालक की विचारशक्ति के इस गुण को अहं-केन्द्रिकता की संज्ञा दी है। उनका कहना है कि शालापूर्व बच्चे यह नहीं समझते कि दूसरा व्यक्ति उसी वस्तुस्थिति को भिन्न तरीके से देख सकता है और भिन्न निष्कर्ष पर पहुँच सकता है।

परिप्रेक्ष्य पर एक प्रयोग–पीयाजे ने चार से ग्यारह वर्ष के बच्चे के साथ प्रयोग किया। प्रयोग में उन्होंने अलग-अलग रंगों और ऊँचाई के तीन पर्वतों के त्रि-आयामी मॉडल को एक मेज पर रखा और बालक को मेज के चारों ओर घूमने और प्रत्येक तरफ या भिन्न-भिन्न आयामों से पर्वत को देखने को कहा। एक कुर्सी पर बालक को बिठाया गया और दूसरी ओर गुड़िया रख दी। बालक को मॉडल से संबंधित चित्र भी दिए। बालक को चित्र को उठाने को कहा, जो उसके पक्ष से पर्वत का दृश्य लगता है। फिर उसे गुड़िया की तरफ से पर्वत कैसा दिखता है, वह चित्र उठाने को कहा। शालापूर्व बच्चे कोई भी चित्र उठा कर दे सकते हैं। पांच-छ: वर्ष के बच्चे ने वही चित्र उठाया, जो वह दृश्य दिखाता है, जो उसे नजर आ रहा है। इससे पता चलता है कि बच्चे यह समझते हैं कि दूसरे लोग भी उन्हीं की भांति देखते और समझते हैं।

हाल ही में हुए शोध–शोधकर्त्ताओं ने माना कि यह प्रयोग काफी पेचीदा था और बच्चों के दैनिक जीवन के अनुभवों से काफी हटकर था। उनके अनुसार बच्चे यह जानते हैं कि दूसरा व्यक्ति क्या सोच रहा है और महसूस कर रहा है। एक प्रयोग में बच्चों को बताया गया कि इस गुड़िया ने कुछ गलत काम किया है और उसे मॉडल में दिखाई गई दीवार के पीछे छिपना है। बच्चों को कल्पना द्वारा स्वयं को गुड़िया की जगह मानकर ऐसी जगह ढूँढनी है, जहाँ पुलिस वाले उसे न ढूँढ़ पाएं। शालापूर्व बच्चों ने गुड़िया को सफलतापूर्वक छुपा दिया।

जॉर्ज बटरवर्थ और मार्गरिट हैरिस के अनुसार बचपन के दौरान, व्यक्ति आमतौर पर व्यक्तिपरक और उद्देश्य के बीच अंतर करने में असमर्थ होता है।

जीन पीयाजे (1896-1980) ने संज्ञानात्मक विकास के चरणों का वर्णन करते हुए मानव बुद्धि के विकास के बारे में एक सिद्धांत विकसित किया। उन्होंने दावा किया कि प्रारंभिक बाल्यावस्था पूर्व परिचालन विचार का समय है, जिसमें बच्चों की तार्किक विचार प्रक्रिया में असमर्थता है। पीयाजे के अनुसार, बच्चों के पास तर्क के लिए मुख्य बाधाओं में से एक, जिसमें सेंट्रेशन शामिल है, "किसी स्थिति के एक पहलू पर दूसरों के बहिष्कार पर ध्यान केंद्रित करने की प्रवृत्ति।" एक विशेष प्रकार का केंद्रबिंदु उदासीनता है-शाब्दिक रूप से, "आत्म केंद्रितता।" पीयाजे ने दावा किया कि छोटे बच्चे अहंकारी हैं, जो केवल अपने व्यक्तिगत दृष्टिकोण से दुनिया पर विचार करने में सक्षम हैं। उदाहरण के लिए, एक तीन वर्षीय ने अपनी मां को अपने जन्मदिन के अवसर के रूप में एक मॉडल ट्रक प्रस्तुत किया; "उन्होंने ध्यान से उपहार को लपेटा था और अपनी मां को एक अभिव्यक्ति के साथ दिया था जिसमें स्पष्ट रूप से दिखाया गया था कि वह उससे प्यार करने की उम्मीद करती है।" तीन साल के लड़के ने वर्तमान को स्वार्थ या लालच से नहीं चुना था, लेकिन वह बस यह महसूस करने में असफल रहा कि अपनी माँ के दृष्टिकोण से, वह मॉडल ट्रक का उतना आनंद नहीं ले सकती है जितना वह चाहेगा।

पीयाजे का अनुभव बच्चों में अहंकार के दो पहलुओं से संबंधित था–भाषा और नैतिकता। उनका मानना था कि अहंकारी बच्चे मुख्य रूप से स्वयं के साथ संवाद के लिए भाषा का उपयोग करते हैं। पीयाजे ने देखा कि बच्चे खेलने के दौरान खुद से बात करेंगे, और यह अहंकारपूर्ण भाषण केवल बच्चे के विचार थे। उनका मानना था कि इस भाषण का कोई विशेष कार्य नहीं था; इसका उपयोग बच्चे की वर्तमान गतिविधि के साथ और मजबूत करने के तरीके के रूप में किया गया था। उन्होंने कहा कि जैसे ही बच्चा संज्ञानात्मक रूप से परिपक्व होता है तो सामाजिक रूप से इस्तेमाल की जाने वाली अहंकारी भाषण की मात्रा कम हो जाती है।

(ख) छोटे बच्चे में परोपकारिता और समानुभूति को बढ़ावा देना

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-52, 'परोपकारिता और समानुभूति'

(ग) विकास की निर्णायक अवधियाँ

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-10, 'निर्णायक अवधियां'

(घ) बच्चों की प्रगति का मूल्यांकन करने की कोई एक विधि

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-33, पृष्ठ-144, 'मूल्यांकन के तरीके'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview
of
The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

बच्चों के लिए देखभाल सेवाओं का संगठन
(Organising Child Care Services)

बाल्यकाल के अनुभव
(The Experience of Childhood)

1

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

प्रस्तावना

बाल्यावस्था बहुत ही कोमल और बहुमूल्य अनुभव है, जिससे हम सभी गुजरे हैं। अगर आज भी हम बचपन की कुछ घटनाएं याद करें, तो कई धुंधली-सी यादें फिर से तरोताजा हो जाती हैं।

बाल्यावस्था के अनुभवों और भावनाओं को समझना बहुत आवश्यक है, क्योंकि प्रत्येक धर्म में बचपन को सीखने का समय माना जाता है। बच्चों में उत्सुकता और कल्पना शक्ति इतनी तीव्र होती है कि वे जल्दी ही अपने-आपको किसी भी परिवेश में ढाल लेते हैं। वैसे तो बच्चों में कई समानताएं होती हैं, परंतु सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश की भिन्नता के कारण प्रत्येक का बचपन भिन्न होता है।

आर्थिक परिस्थितियों के साथ-साथ माता-पिता का बच्चों के साथ उचित रूप से बिताया गया समय भी बच्चों को आत्मनिर्भर व स्वावलंबी बनने में मदद करता है।

कैसा होता है बचपन?

बचपन भावुक, चुस्त, जिज्ञासाओं से भरा हुआ, भावनाओं से जुड़ा हुआ और कल्पनाओं की उड़ान पर सवार होता है। उस समय बच्चे जल्दी से प्रसन्न और उदास हो जाते हैं। उनके क्यों, कब, कैसे, कहाँ जैसे प्रश्न हमेशा तैयार रहते हैं। इसी से वे सीखते हैं और इसी जिज्ञासा की पूर्ति उन्हें आत्मनिर्भर बनाती है।

बचपन में खेल के प्रति लगाव बहुत अधिक होता है। उन्हें खेलने के लिए किसी खास खिलौने की आवश्यकता नहीं होती। वे अपनी कल्पना की उड़ान से आलू, टमाटर को गेंद के रूप में और कुर्सी को टेढ़ा करके गाड़ी के रूप में खेल लेते हैं।

बच्चे बड़ों की दुनिया से प्रभावित होकर जल्दी ही उन जैसे बनना चाहते हैं। वे खेलते हुए भी अपने बड़ों की तरह बातचीत व व्यवहार करते हैं।

बच्चों की क्षमताओं व भावनाओं के बारे में कई लोगों की धारणाएँ सही नहीं हैं। वे समझते हैं कि ये बच्चे नासमझ हैं और इन्हें आसानी से बुद्धू बनाया जा सकता है। परंतु ऐसा नहीं है, बच्चा माँ के गर्भ से ही सीखना शुरू कर देता है और चिकनी मिट्टी के समान उसे जैसा माहौल मिलता है, उसी के अनुरूप अपने को ढाल लेता है।

बाल्यावस्था का सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ

हमारा समाज और कई अन्य कारक हमारे बचपन के अनुभवों को सुनिश्चित करते हैं। जैसे कि एक बच्चा घर की आर्थिक स्थिति ठीक होने की वजह से अच्छे स्कूल में शिक्षा ग्रहण करता है और वहीं दूसरी ओर एक किसान का बेटा घर की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण पिता के साथ खेत में काम करता है।

परिवार व समुदाय के रीति-रिवाज, परंपराएं, नैतिक मूल्य व विश्वास, गांव व शहर का माहौल भी बचपन के अनुभवों को प्रभावित करता है।

लिंग

www.neerajbooks.com

एक बच्चे का लड़का या लड़की होना भी बचपन के अनुभव को निर्धारित करता है। पालन-पोषण के दौरान उसे किस प्रकार के अवसर व सुविधाएं मिली हैं यह तथ्य भी उसे आत्मनिर्भर बनने में मदद करता है।

आज भी कई परिवारों में लड़कों व लड़कियों की परवरिश में फर्क देखने को मिलता है। लड़कों को लड़कियों की अपेक्षा अधिक महत्त्व दिया जाता है।

सामाजिक वर्ग

एक बच्चे को किस प्रकार की सुविधाएँ और अवसर उपलब्ध होंगे, यह उसके परिवार के सामाजिक व आर्थिक ढांचे पर निर्भर करता है।

निम्न सामाजिक वर्ग के परिवार

एक निम्न सामाजिक वर्ग इतना पैसा भी नहीं जुटा सकता कि वह अपने बच्चों की बुनियादी जरूरतों को पूरा कर सके। उन्हें जीने के लिए भी संघर्ष करना पड़ता है, तो शिक्षा जैसा शब्द तो उनके लिए व्यर्थ है। इन परिवारों के छोटे-छोटे बच्चे होश संभालते ही माता-पिता की काम में मदद करके जीविका कमाने में लग जाते हैं।

इन बच्चों का बचपन काम के दौरान पत्थर, टहनियों, खाली डिब्बों से खेलते हुए ही बीत जाता है।

मध्यम और उच्च वर्ग के परिवार

आर्थिक स्थिति अच्छी होने के कारण इन परिवारों में बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाना अपने जीवन का महत्त्वपूर्ण लक्ष्य समझा जाता है। एक सम्पन्न परिवार में बच्चे को सभी सुख-सुविधाएं प्राप्त होती हैं। इन्हें आर्थिक साधन जुटाने के लिए संघर्ष नहीं करना पड़ता और इनका अधिक से अधिक समय पढ़ने व खेलने में ही बीतता है, ताकि वे आत्मनिर्भर व स्वावलंबी बन सकें।

बाल-श्रम

निम्न वर्ग के परिवार के बच्चे अस्वस्थ और कठिन व शोषणकारी स्थितियों में कारखाने व फैक्ट्रियों में जोखिम भरे काम करते हैं, जहाँ बदले में उन्हें पर्याप्त मजदूरी भी नहीं मिलती। ये बच्चे एक दिन में औसत 12 से 14 घंटे काम करते हैं। जिन कमरों में वे काम करते हैं, वे खचाखच भरे हुए होते हैं व हवादार नहीं होते। इन बच्चों के हाथ बिना किसी दस्तानों के अम्ल व क्षारीय घोलों में सुबह से शाम तक डूबे रहते हैं, जो उनके स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक होते हैं। 6-7 साल काम करने के बाद जब बच्चे 13-14 साल की उम्र में पहुंचते हैं तब वे त्वचा की बीमारियों, एलर्जी व कैंसर से ग्रस्त हो जाते हैं। तमिलनाडू में माचिस उद्योग, जम्मू-कश्मीर में कढ़ाई और अलीगढ़ में ताला उद्योग कुछ ऐसे उद्योग हैं, जहाँ बाल श्रम प्रचलित है।

धर्म

सभी धर्मों ने बच्चों को कोमल, नि:स्वार्थी और भगवान् के रूप में माना है, जो किसी भी प्रकार के हेरफेर के बिना अपने संस्कारों व रीति-रिवाजों को खेल-खेल में अपना लेता है। धर्म दैनिक जीवन से संबंधित नियमों व नैतिक मूल्यों को प्रभावित करता है।

एक हिन्दू समाज में रहने वाला बालक रामायण पाठ, हवन आदि गतिविधियां घर में होते हुए देख अपने-आप सीख जाता है। उसे तीर्थ स्थानों व पवित्र चीजों के प्रति आदर करना एक परिवार में रहकर स्वयं ही आ जाता है।

पारिवारिक संरचना और परस्पर संबंध

पारिवारिक संरचना और आपसी संबंध बाल्यावस्था को प्रभावित करते हैं। एक परिवार जहाँ पर माता व पिता दोनों काम पर जाते हैं और पीछे से छोटे बच्चे को दादा-दादी का सहयोग मिल जाता है, तो वह अपने को सुरक्षित समझने लगता है।

एक परिवार जहाँ पर माता व पिता में से एक का अभाव होता है और माता-पिता अकेले ही नौकरी के साथ-साथ बच्चों की देखभाल का उत्तरदायित्व भी निभाते हैं, तो किसी स्थिति में बच्चा जल्दी ही आत्मनिर्भर बनना सीख जाता है। कई बार माता-पिता में से एक का अभाव बच्चे पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है, क्योंकि वे एक के अभाव में अपने को अकेला व दूसरों से भिन्न समझने लगते हैं। इसके लिए पिता के अभाव में माँ को अपनी भूमिका व उत्तरदायित्व को अच्छे से निभाना होगा।

अत: यह जरूरी है कि माता या पिता दोनों ही बच्चे के साथ उचित समय बिताएं, जिसमें उसकी अच्छे से देखभाल करें, उसकी जिज्ञासा को पूर्ण करने के लिए उचित उत्तर दें, उसकी समस्याओं को ध्यान से सुनकर उनका हल ढूंढने का प्रयास करें, बच्चे के साथ सार्थक संवाद स्थापित करें। ऐसा करने में थोड़ा समय भी महत्त्वपूर्ण होगा।

पारिस्थितिकी संदर्भ

पारिस्थितिकी का अर्थ है, वह भौतिक वातावरण जिसमें व्यक्ति अपना जीवनयापन करता है।

बच्चे अपनी पारिस्थितिक स्थिति के अनुरूप ही कौशल सीखते हैं; जैसे पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले बच्चे भेड़ों को चराने ले जाते हैं, वे ऊन बनाना सीख जाते हैं।

रेगिस्तान में रहने वाले बच्चे ऊंट की देखभाल करना सीख जाते हैं व रेत के टीलों को पार करने में माहिर हो जाते हैं।

विभिन्न भौगोलिक स्थानों को ग्रामीण, शहरी व जनजातीय क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है।

शहरों में रहने का अनुभव

शहर का नाम लेते ही हमें ध्यान आता है–घनी आबादी और विविधता। जहाँ शहर में एक तरफ उच्च आय वर्ग के लोग हैं, जो अपनी अच्छी आय के बल पर सभी सुख-सुविधाएं अर्जित कर सकते हैं। टेलीफोन, कंप्यूटर, इंटरनेट आदि का प्रयोग करके घर बैठे दुनिया के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। गर्मी में एयरकंडीशनर व रेफ्रिजरेटर का प्रयोग बिना किसी हिचक के कर सकते हैं। वहाँ बच्चों की शिक्षा के लिए अच्छे से अच्छे स्कूलों की खोज की जाती है, ताकि उनका सर्वतोमुखी विकास हो सके और वे आत्मनिर्भर बन

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

सकें।

दूसरी तरफ शहर में रहने वाला वह गरीब व्यक्ति जो अपनी आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण अपने बेटे या बेटी को अपने रोजगार में मदद के लिए लगा लेता है, वह लोगों के घर में सफाई करके या चाय की दुकान पर काम करके अपनी जीविका अर्जित करता है।

गांव में रहने का सुख

गांव में आबादी कम होती है, परंतु वहाँ पर अधिकतर बच्चे अपने माता-पिता के साथ व्यवसाय में मदद करते हैं, चाहे वह खेती-बाड़ी का काम हो या मिट्टी के बर्तन बनाना।

यदि पारिवारिक स्थिति अच्छी है, तो बच्चों को स्कूल जाने का समय मिल जाता है। गांव में रहने वाले बच्चों के पास व्यावहारिक ज्ञान (Practical Knowledge) बहुत ही अधिक होता है। वे भले ही Computer या Internet का प्रयोग न कर सकें, परंतु रेडियो या टेलीविजन नेटवर्क के विस्तार से बाहरी दुनिया गांवों तक पहुंच गई है।

दूसरी ओर राजस्थान का **भैया गाँव** एक ऐसा दूरस्थ गाँव है, जहाँ पर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र 60 कि.मी. दूर है और अस्पताल 150 कि.मी. दूर है।

अलग-अलग परिस्थितियों के अनुभव अलग-अलग होते हैं।

जनजातीय क्षेत्र में रहने का अनुभव

भारत में अनेक जनजातियां हैं। शहरों और कस्बों के नजदीक रहने वाली जातियां काफी हद तक शहरों से प्रभावित हैं और उनमें घुल-मिल गई हैं, परंतु अभी भी कुछ जनजातियां बाकी दुनिया से बिल्कुल अलग हैं, जैसे-पहाड़ी मढ़िया जनजाति, जो मध्य प्रदेश के बस्तर जिले में निवास करती है।

पहाड़ी मढ़िया जाति के लिए झूम खेती जीवनयापन का एकमात्र साधन है। भूमि पर सामूहिक स्वामित्व होता है। लोग बाहरी दुनिया पर केवल नमक, मिर्च व तंबाकू के लिए निर्भर हैं। पहाड़ी मढ़िया में विवाह से पूर्व यौन की आज्ञा है। बाल-विवाह बिल्कुल नहीं होता। यहाँ शिक्षित लोगों की संख्या कम है और स्वास्थ्य संबंधी सुविधा की कमी के कारण अस्वस्थता बहुत अधिक है।

राज्य सरकार और स्वैच्छिक एजेंसियों की मध्यस्थता के कारण इनके रहन-सहन में बदलाव आया है। अब वहाँ पर एक अस्पताल, स्कूल, व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र और उचित दर की दुकान भी है। झूम खेती को भी व्यवस्थित खेती में परिवर्तित करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

सारांश

इस इकाई में आपने पढ़ा कि बच्चों में उत्सुकता, अन्वेषण की अभिलाषा, कल्पनाशीलता, वयस्कों की नकल करना आदि कई गुण सामान्य रूप से पाए जाते हैं। बच्चों के बहुत-से अनुभव सार्वभौम होते हैं फिर भी सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश की भिन्नता के कारण प्रत्येक बच्चे का बचपन भिन्न होता है। आज भी भारत में लड़कों को लड़कियों की अपेक्षा अधिक महत्त्व दिया जाता है।

निम्न समााजिक वर्ग के बच्चों को छोटी उम्र में ही जीवन-यापन के लिए जोखिम भरे काम करने पड़ते हैं। वे स्कूल नहीं जा सकते, जबकि दूसरी ओर मध्यम व उच्च वर्ग के बच्चों की सभी मूलभूत आवश्यकताएं और अभिलाषाएँ अपने-आप ही पूरी हो जाती हैं।

बालक या बालिका को किस प्रकार का पारिवारिक सहयोग मिलता है, यह उसके विकास को प्रभावित करता है। गाँव, शहर तथा जनजातीय क्षेत्रों में बच्चों के व्यवहार भिन्न होते हैं।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. बाल श्रम से क्या तात्पर्य है?

उत्तर-बाल श्रम शब्द का प्रयोग उन निम्न वर्ग के परिवार के बच्चों के लिए किया जाता है जो कि अस्वस्थ और कठिन व शोषणकारी स्थितियों में कारखाने और फैक्ट्रियों में जोखिम भरे काम करते हैं, जिनका उनके स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर पड़ता है और जहाँ बदले में उन्हें पर्याप्त मजदूरी भी नहीं मिलती। ये बच्चे दिन में 12-14 घंटे काम करते हैं। इन कामों में लगे रहने के कारण ये बच्चे न तो खेल सकते हैं और न ही अपना मनोरंजन कर सकते हैं। तमिलनाडू में माचिस उद्योग, जम्मू-कश्मीर में कढ़ाई उद्योग आदि में बाल श्रम प्रचलित है।

प्रश्न 2. पहाड़ी मढ़िया की जीवन-शैली में बाहरी दुनिया के संपर्क में आने से जो परिवर्तन आए हैं, उनमें से किन्हीं तीन को बताइए।

उत्तर-पहाड़ी मढ़िया जनजाति मध्य प्रदेश के बस्तर जिले में है। राज्य सरकार और स्वैच्छिक एजेंसियों की मध्यस्थता की वजह से पहाड़ी मढ़िया जाति अब बाहरी दुनिया से परिचित हो गई है। इस कारण उनके रहन-सहन में बदलाव आया है।

1. अब वहाँ एक अस्पताल, स्कूल, व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र और उचित दर की दुकान भी है।

2. झूम खेती को व्यवस्थित खेती में परिवर्तित करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

3. सौर ऊर्जा का प्रयोग भी कई गांवों में किया जा रहा है।

प्रश्न 3. कोई तीन सामान्य आचरण बताइए जिनसे यह ज्ञात हो कि शहरी बच्चे के अनुभव एक गांव में रहने वाले बच्चे से भिन्न होते हैं।

उत्तर-शहरी बच्चे शहरी जीवन की तेज रफ्तार के अनुरूप ही अपना जीवन जीते हैं, जबकि गांव में जीवन की गति बहुत ही धीमी है।

एक शहरी बच्चे को अखबार, पत्रिकाओं, टेलीविजन, कंप्यूटर, इंटरनेट और किताबों से विविध जानकारी मिल जाती है, जबकि गाँव के बच्चों की जानकारी सीमित होती है।

एक शहरी बच्चे को शहर में अस्पताल, होटल, स्कूल,

www.neerajbooks.com

सिनेमा, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, यातायात के विभिन्न साधन और अन्य कई सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं।

प्रश्न 4. अपने अनुभव व स्मरणों में से निम्नलिखित का एक उदाहरण लिखिए :

1. बच्चे में उत्सुकता;

2. बच्चों द्वारा वयस्कों की नकल करना।

उत्तर–1. बच्चे में उत्सुकता–बच्चों को अपने आस-पास की वस्तुओं की खोजबीन करने में रुचि होती है, यही उनके सीखने का एक तरीका है। क्यों, क्या, कब आदि प्रश्न हमेशा तैयार रहते हैं। अपने प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए वे खेलते-खेलते अपने खिलौनों को भी तोड़-मरोड़ कर उन्हें खोल देते हैं, यह जानने के लिए कि यह कैसे चलता है।

2. बच्चों द्वारा वयस्कों की नकल करना–बच्चे बड़ों की दुनिया से आकर्षित होते हैं और जल्दी से बड़ों जैसा बनना चाहते हैं। इसलिए जब बच्चे आपस में खेल रहे होते हैं, तो खासतौर से लड़कियाँ अपने स्कूल की मैडम बनकर दूसरे बच्चों को पढ़ाती हैं जैसा कि उनकी मैडम स्कूल में किया करती है। गृह-कार्य देखना, बच्चों को डांटना या सजा देना या उनसे प्रश्न पूछना आदि में बच्चों द्वारा वयस्कों के कार्यकलापों की झलक साफ दिखाई देती है।

प्रश्न 5. स्कूल की उपस्थिति में निम्न सामाजिक वर्ग के लड़कों और लड़कियों की संख्या में अंतर बताइए।

उत्तर–स्कूल की उपस्थिति में निम्न सामाजिक वर्ग इस बात के लिए तैयार नहीं होता कि उसका बच्चा काम में मदद करके जीविका कमाने के बजाय स्कूल जाए। फिर भी अगर बड़ा भाई पिता की मदद कर रहा है, तो छोटे भाई को स्कूल जाने की अनुमति मिल जाती है, जहाँ पर उसे निःशुल्क शिक्षा प्राप्त होती है, परंतु लड़की को कभी नहीं, क्योंकि माता-पिता की अनुपस्थिति में छोटी लड़की का एक महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्व घर चलाना और छोटे बच्चे की देखभाल करना है। इन परिवारों में लड़कों को अधिक महत्त्व दिया जाता है।

प्रश्न 6. वे कार्य बताइए जो बच्चे अपने परिवार की मदद के लिए करते हैं।

उत्तर–मध्यम या उच्च वर्ग के परिवार के बच्चे तो अच्छी शिक्षा प्राप्त करने के लिए स्कूलों में जाते हैं और खाली समय में घर में छोटे-बड़े काम करके परिवार की मदद करते हैं, परंतु निम्न वर्ग के बच्चों को होश संभालते ही अपनी जीविका के लिए माता-पिता के काम में मदद करनी पड़ती है या फिर बाल-श्रम के रूप में शोषणकारी परिस्थितियों में काम करना पड़ता है।

■■

प्रस्तावना

बाल्यावस्था के अनुभवों और भावनाओं का अध्ययन करने के बाद हम बच्चों में भिन्नता के कारण को जान पाए हैं। इस इकाई

Neeraj
Publications
www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com